जन वाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरूक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये

मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से

चयन और पुनर्लेखन : विष्णु नागर

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से
चयन और पुनर्लेखन: विष्णु नागर
Mulla Nasruddin Ke Kissay
Selection : Vishnu Nagar

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
© सर्वाधिकार सुरक्षित
भारत ज्ञान विज्ञान समिति

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

रेखांकन: विभास दास
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1996,1999, 2003

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने-लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य:10 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 6569943, Fax : 91 - 011 - 6569773,* **email: bgvs@vsnl.net**

मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से

किसी को नहीं मालूम कि मुल्ला नसरूद्दीन नामक कोई आदमी था या नहीं था। मगर उसके दिलचस्प किस्से दुनियाभर में मशहूर हैं। हमारे नवसाक्षरों के लिए वे बहुत काम के हैं। इन किस्सों को सरल ढंग से लिखा है ***विष्णु नागर*** *ने।*

मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से

एक दिन एक वजीर ने अपने बादशाह से मुल्ला नसरुद्दीन की खूब तारीफ की। उसे बहुत लायक आदमी बताया। उसकी अकल की बहुत प्रशंसा की।

बादशाह ने कहा: ''ठीक है मैं उसे भी अपना वजीर बना लेता हूँ।'' बादशाह ने मुल्ला नसरुद्दीन को बुलावा भेजा। नसरुद्दीन को वजीर बना दिया गया। बादशाह ने नसरुद्दीन से कहा: ''मैं अपनी जनता को खुशहाल बनाना चाहता हूँ। तुम कोई तरकीब बताओ।

मुल्ला नसरुद्दीन का जवाब था: ''इसकी एक ही तरकीब है। जनता का खून चूस-चूस कर जो दौलत आप ने जमा की है, उसे जनता को वापिस कर दीजिए। जनता खुशहाल हो जाएगी।''

अपने वजीर से बादशाह को ऐसे जवाब की उम्मीद नहीं थी।

❐❐❐

मुल्ला नसरुद्दीन बादशाह के वजीर बन गए। अब तो हर कोई उनका दोस्त बनना चाहता था।

किसी ने कहा: ''मुल्ला नसरुद्दीन आप किस्मत वाले हैं। कितने ज़्यादा दोस्त हैं आपके।''

मुल्ला नसरुद्दीन ने जवाब दिया: ''आज तो मेरे बहुत से दोस्त हैं। मगर मेरे असली दोस्तों का पता उस दिन चलेगा जब मैं वजीर नहीं रहूँगा।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा: ''यह बताओ कि जनता को किस बात से ज़्यादा खुशी होगी।''

''आपके स्वर्गवासी होने से,'' मुल्ला नसरुद्दीन का सीधा-सा जवाब था।

❑❑❑

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन की आँखों में कोई तकलीफ हो गई। उन्हें हर चीज धुंधली-धुंधली नजर आने लगी।

रोज मुल्ला नसरुद्दीन बादशाह का मजाक उड़ाया करता था। आज बादशाह को मौका मिल गया। उसने कहा: ''सुना है तुम्हें एक चीज दो नज़र आने लगी है। मुबारक हो। तुम्हारे पास एक गधा है। अब तुम्हें दो दिखेंगे''

मुल्ला ने कहा: ''आपने सही फरमाया। आपकी भी मुझे दो की जगह चार टांगें दीख रही हैं।''

❑❑❑

बादशाह मुल्ला नसरुद्दीन से नाराज था। उनकी खिल्ली उड़ाना चाहता था। उसने सबके सामने ऐलान किया: ''आज से हम नसरुद्दीन को गधों का बादशाह बनाते हैं।''

बादशाह के सारे दरबारी यह सुनकर हँस पड़े। मगर

नसरुद्दीन उठा। उसने इसके लिए बादशाह का शुक्रिया अता किया। फिर बादशाह से कहा: ''हटिये। इस गद्दी पर मुझे बैठने दीजिए।''

यह सुनकर बादशाह गुस्सा हो गया। उसने कहा: ''यह क्या बदतमीजी है। तुम और मेरी गद्दी पर बैठोगे? तुम होश में तो हो!''

नसरुद्दीन ने कहा: ''अब शोर मत मचाइये। अभी आपने मुझे गधों का बादशाह बनाया है। यह गद्दी आज से मेरी हुई।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह और मुल्ला नसरुद्दीन हँसी-मजाक कर रहे थे। मगर अचानक बादशाह गंभीर हो गया। उसने पूछा: ''मुल्ला नसरुद्दीन यह तो बताओ कि मरने पर मुझे स्वर्ग मिलेगा या नर्क?''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''बेशक नर्क।''

यह सुनकर बादशाह गुस्सा हो गया। उसने मुल्ला नसरुद्दीन को खूब डाँटा-फटकारा।

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''हुजूर खता माफ हो। मगर सच यह है कि आपने बड़ी तादाद में उन लोगों को मरवा दिया है, जो कि स्वर्ग जाने के काबिल थे। अब स्वर्ग उनसे खचाखच भरा हुआ है। वहाँ आपके लिए जगह नहीं बची है।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह ने नसरुद्दीन से कहा: ''कोई ऐसा काम बताओ, जिसे करके मरने के बाद मुझे स्वर्ग मिले।''

नसरुद्दीन ने कहा: ''दिन-रात सोइये।''

बादशाह ने नाराज होकर जवाब दिया: ''क्या कहते हो? सोने से भी किसी को स्वर्ग मिलता है?''

नसरुद्दीन ने कहा: ''सबको नहीं मिलता। मगर आपको मिलेगा। सोकर आप पाप करने से बचे रहेंगे।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह ने नसरुद्दीन से पूछा: ''मरकर तुम कहाँ जाना चाहोगे? स्वर्ग या नर्क?''

नसरुद्दीन ने बादशाह से पूछा: ''पहले आप बताइये।'' बादशाह ने कहा: ''जाहिर है कि स्वर्ग जाना चाहूँगा।''

नसरुद्दीन ने कहा: ''तब मैं नर्क में जाऊँगा। मरने के बाद भी मैं आपके साथ रहना बर्दाश्त नहीं कर सकता।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह ने नसरुद्दीन से कहा: ''नसरुद्दीन मेरे सामने तो मेरी लोग खूब तारीफ करते हैं। मगर पीठ पीछे गालियाँ देते हैं। ऐसा क्यों?''

नसरुद्दीन ने कहा: ''ऐसा इसलिए होता है कि आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। लोग भी आपके साथ यही सलूक करते हैं।''

❑❑❑

बादशाह की बेगम के पैर भारी थे। बादशाह ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा: ''तुम तो ज्योतिषी हो। यह बताओ कि मेरी बेगम

को लड़का होगा या लड़की ?''

''लड़की,'' मुल्ला नसरुद्दीन ने जवाब दिया।

बादशाह ने कहा: ''लड़की हमारे किस काम की ? लड़का होगा तो हमारा वारिस बनेगा। लड़की होगी तो यह गद्दी खाली रहेगी।''

नसरुद्दीन ने कहा: ''अच्छा रहेगा। जनता को राहत रहेगी।''

❑❑❑

एक दिन बादशाह और मुल्ला नसरुद्दीन साथ-साथ घूम रहे थे। बादशाह ने पूछा: ''यह बताओ कि अगर मुझे बाजार में गुलाम की तरह बेचा जाए तो मेरी कितनी कीमत लगेगी ?''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''एक लाख रुपये।''

बादशाह ने कहा: ''तुम बेवकूफ हो। तुम्हारी अकल घास चरने गई है। एक लाख रुपये तो मेरे हार की ही कीमत है।''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''आपको खरीदने वाले आपकी नहीं, सिर्फ हार की कीमत देंगे।''

❑❑❑

मुल्ला नसरुद्दीन का दावा था कि उन्हें पक्षियों की बोली समझ में आ जाती है। बादशाह को भी यह बात पता थी। वह एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन को अपने साथ शिकार पर ले गया।

रास्ते में एक इमारत दिखी। इमारत खंडहर हो चुकी थी। उस पर उल्लू बोल रहे थे।

बादशाह ने कहा: ''मुल्ला नसरुद्दीन, ये उल्लू क्या बोल रहे हैं ?''

मुल्ला ने जवाब दिया: ''हुजूर ये कह रहे हैं कि ए बादशाह तू सावधान हो जा। जनता पर जुल्म ढाना बंद कर वरना तेरी सल्तनत का भी वही हाल होगा, जो इस इमारत का हुआ है।''

❑❑❑

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन ने देखा कि बादशाह के महल की दीवारें ऊँची की जा रही हैं। एक वजीर कामकाज की देखरेख कर रहा है।

नसरुद्दीन ने वजीर से पूछा: ''भई यह दीवार क्यों ऊँची की जा रही है ?''

वजीर ने कहा: ''सीधी-सी बात है। दीवार ऊँची होगी तो महल में चोर नहीं घुस सकेंगे। सोना-चाँदी, हीरा-

जवाहरात की चोरी बंद हो जायगी।''

नसरुद्दीन ने कहा: ''इससे बाहर के चोर तो रुक जाएँगे। मगर अंदर के चोर कैसे रुकेंगे?''

❑❑❑

एक दिन बादशाह ने नसरुद्दीन से कहा: ''आज सुबह मैंने अपनी सूरत आईने में देखी। मैं वाकई बदसूरत हूँ। अब कभी आईने में अपना चेहरा नहीं देखूँगा।''

नसरुद्दीन तुरंत बोला: ''आप तो अपनी सूरत एक दिन

देखकर ही घबरा गये। मुझे तो दिन-रात देखनी पड़ती है। सोचिये, मेरा क्या हाल होता होगा।''

❑❑❑

मुल्ला नसरुद्दीन बहुत नामी हकीम भी था। वह गाँव-गाँव जाकर लोगों का इलाज करता था।

एक सेठ उसे परेशान करना चाहता था। उसने नसरुद्दीन से कहा: ''कल रात जब मैं सो रहा था, तो मेरा मुँह खुला था। चूहा मेरे पेट में घुस गया। इसका क्या इलाज है?''

नसरुद्दीन ने कहा: ''बिल्ली खा लो। बिल्ली चूहे को खा जाएगी।''

❑❑❑

बादशाह का वजीरे-आजम बीमार हो गया। उसने महंगे से महंगा इलाज कराया। मगर वह ठीक नहीं हुआ। मजबूर होकर उसने नसरुद्दीन को इलाज के लिए बुलाया।

जनाब वजीरे आजम लेटे थे। नसरुद्दीन ने एक मिनट इंतजार किया। फिर वह घर वालों पर नाराज हो गये। ''मैं मुर्दों का इलाज नहीं करता।''

लेकिन घर वालों ने कहा: ''मगर ये तो जिन्दा हैं।''

नसरुद्दीन ने कहा: ''लेकिन इनका दिल तो मुर्दा है। जिसका दिल मर चुका, उसका जिन्दा रहना बेमतलब है।''

❑❑❑

मुल्ला नसरुद्दीन को उसके दोस्त ने दावत पर बुलाया। नसरुद्दीन फटे-पुराने कपड़े पहन कर गया। दोस्त ने

नसरुद्दीन को घर से निकाल दिया। उससे कहा: ''मेरी बेइज्जती मत कराओ। दावत खानी हो तो शानदार कपड़े पहनकर आओ।''

दुबारा नसरुद्दीन शानदार कपड़े पहनकर आये। दोस्त ने उसका खूब स्वागत किया। उन्हें खाने के लिए बैठाया।

मगर यह क्या! नसरुद्दीन तो अपनी पोशाक को खाना खिला रहे थे!

दोस्त ने कहा: ''यह क्या कर रहे हो? पागल हो क्या? पोशाक भी कहीं खाना खाती है?''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''तुमने पोशाक को खाने पर बुलाया था। मुझे नहीं। उसी को खिला रहा हूँ!''

❑❑❑

एक बार नसरुद्दीन को उसके दोस्त ने दावत पर बुलाया। ाने पर और भी मेहमान बुलाये गये थे।

नसरुद्दीन के पास बैठा मेहमान गपागप खा रहा था। साथ में पकवान अपनी जेब में भी रखता जा रहा था।

नसरुद्दीन ने पानी का गिलास उठाया और पानी उसकी जेब में डालने लगा।

मेहमान ने कहा: ''यह क्या बदतमीजी है?''

नसरुद्दीन ने कहा: ''घबराओ मत। तुम्हारी जेब खूब खा चुकी है। उसे अब प्यास लग रही है। उसे पानी पिला रहा हूँ।''

❑❑❑

मुल्ला नसरुद्दीन का बचपन का एक दोस्त था। वह बड़ा हाकिम बन गया। नसरुद्दीन उससे मिलने गया। दोस्त ने पहचानने से इनकार कर दिया।

दरअसल दोस्त उसे पहचान गया था। मगर गरीब नसरुद्दीन को अपना दोस्त मानने में उसे शर्म आ रही थी। उसने नसरुद्दीन से पूछा: ''तुम कौन हो? क्या चाहते हो?''

यह सुनकर नसरुद्दीन को गुस्सा आ गया। उसने गुस्से में जवाब दिया: ''मैं मुल्ला नसरुद्दीन हूँ। बचपन का तुम्हारा जिगरी दोस्त। किसी ने बताया कि तुम अंधे हो चुके हो, इसलिए तुम्हारी देखभाल करने आया हूँ।''

❑❑❑

एक बार मुल्ला नसरुद्दीन तालाब के किनारे हाथ-पाँव धो रहे थे। तभी एक सेठ भी आया। धोखे से उसका पाँव फिसल गया। वह तालाब में गिर पड़ा।

एक आदमी ने सेठ से कहा: ''अपना हाथ मुझे दीजिये। मैं आपको बाहर खींच लूँगा।''

लेकिन सेठ पर इसका बिल्कुल असर नहीं हुआ। उसने हाथ नहीं दिया।

यह देखकर नसरुद्दीन समझ गये। उन्होंने कहा: ''ये हाथ नहीं देंगे। इन्होंने लेना सीखा है। देना नहीं।''

यह कहकर नसरुद्दीन ने खुद अपना हाथ बढ़ाया और कहा: ''सेठ जी, मेरा हाथ लीजिए। मैं आपको बाहर खींच लूँगा।''

यह सुनते ही सेठ ने नसरुद्दीन का हाथ पकड़ लिया और सेठ बाहर आ गया।

❑❑❑

गाँव में नया काजी आया था। किसी ने मुल्ला नसरुद्दीन से उसकी बहुत तारीफ करते हुए कहा: ''सुना तुमने। नया काजी तुमसे भी ज्यादा अक्लमंद है। अक्ल उसके दिमाग में कूट-कूट कर भरी हुई है।''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''जाहिर है। काजी अपनी अक्ल का इस्तेमाल तो करते नहीं। उनकी अक्ल खर्च होती ही नहीं। इसीलिए अक्ल दिमाग में कूट-कूट कर ही भरी होगी।''

❑❑❑

एक आदमी मुल्ला नसरुद्दीन के पास सलाह लेने आया। उसने पूछा: ''यह बताओ कि ताबूत के आगे रहना चाहिए या पीछे?''

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा: ''आगे रहो या पीछे। फर्क नहीं पड़ता। सिर्फ ताबूत के अंदर रहने से फर्क पड़ता है।''

❑❑❑

एक दिन एक चोर मुल्ला नसरुद्दीन के घर में घुस आया। नसरुद्दीन ने देखा तो संदूक में छिप गया।

चोर ने घर का कोना-कोना छान मारा। उसे कुछ नहीं मिला।

आखिर में उसने संदूक खोली। उसमें नसरुद्दीन बैठा था।

चोर ने पूछा: ''तुम संदूक में क्यों छिपे बैठे थे।'' नसरुद्दीन ने कहा: ''इसलिए कि मैं हूं गरीब। तुम्हारे लायक मेरे घर में कुछ भी नहीं है। इसलिए जब मैंने देखा कि तुम आ रहे हो मैं शर्म से गढ़ गया और छिपकर संदूक में बैठ गया।''

❑❑❑❑